अनिष्ट परमाणु हृदय की गति को नष्ट करते हैं

आचार्य श्री महाप्रज्ञ

बीदासर, 14 मार्च।

''केशी स्वामी और प्रदेशी राजा दोनों का संवाद चल रहा है। प्रदेशी केशी स्वामी को समझाने का प्रयत्न कर रहा है और केशी स्वामी प्रदेसी को समझाने का या उनकी आशंकाओं का समाधान देने का प्रयत्न कर रहे हैं। दोनों ओर चल रहा है क्योंकि प्रश्न इतने हैं कभी उनका अंत नहीं होता और समाधान भी उतने ही हैं, जितनी समस्याएं है। हर व्यक्ति के जीवन में समस्या आती है कोई भी समस्या ऐसी नहीं होती जिसका समाधान न हो। प्रश्न का उत्तर भी कठिन, समस्या का समाधान भी कठिन। केशी स्वामी बहुत समर्थ हैं, अंतरज्ञानी हैं, अतिन्द्रिय ज्ञानी हैं और उनका समाधान बड़ा सटिक होता है। आखिर समझने वाले की भी अपनी क्षमता होती है। रहस्य को समझना बड़ा कठिन होता है। जो सामने प्रत्यक्ष है, हर आदमी देखता है समझ जाता है। किंतु जो छिपा हुआ है, दूर है उसे पकड़ना कठिन है। सूक्ष्म रहस्य है उसे समझना बड़ा कठिन है, जीव है यह भी सूक्ष्म ज्ञान है। ''

उक्त विचार पूज्य आचार्यप्रवर ने केशी स्वामी और प्रदेशी राजा के कहानी का वाचन करते हुए फरमाया।

आचार्यश्री ने कहानी में फरमाया - ''परदेशी कह रहा है जो शरीर है वही जीव है, इससे अलग कोई जीव नहीं। केशी स्वामी उसका समाधान कर रहे हैं कि शरीर अलग है और जीव अलग है। अब जीव बड़ा सूक्ष्म है, सूक्ष्म रहस्य को पकड़ना कितना कठिन होता है। एक आदमी अकारण भी दुःखी बनता है और सकारण भी बनता है। बिना कारण बैठा-बैठा दुःखी बन जाता है। अपने चिंतन से, अपने मन में कोई ऐसा चिंतन आया कि बैठा-बैठा दुःखी बन गया और बैठा-बैठा सुखी भी बन सकता है। कोई अच्छा चिंतन आया बैठा हुआ सुखी भी बन जाता है। इसका कारण क्या है हम रहस्य को समझें? जब तक रहस्य पकड़ में नहीं आता तब तक कुछ भी नहीं होता। यथार्थ, रहस्य को समग्रता से पकड़ना बड़ा कठिन होता है।''

आचार्यवर ने फरमाया - ''आगम साहित्य के अध्ययन के आधार पर इसका निर्णय करें तो साफ है कि आकाश मण्डल में दो प्रकार के परमाणु स्कंध फैले हुए हैं जिसमें शुभ परमाणु भी हैं और अशुभ परमाणु भी है। इष्ट परमाणु भी है तो अनिष्ट परमाणु भी है। एक आदमी अशुभ चिंतन करता है, मन अशुभ, अशुभ बोलता है तो वाणी भी अशुभ और शरीर से भी अशुभ प्रवृत्ति करता है तो वह अशुभ परमाणुओं का आकर्षण करता है वे परमाणु आते हैं और आदमी को दुःखी बना देते हैं। अच्छा चिंतन, अच्छा विचार, अच्छी वाणी, अच्छी काया की प्रवृत्ति तो शुभ परमाणुओं का आकर्षण होता है और वे शुभ परमाणु आदमी को सुखी बना देते हैं, जीवन को आनन्दमय बना देते हैं।''

आचार्यप्रवर ने फरमाया - ''नन्दी सूत्र की टीका में महत्त्व की बात है कि जो व्यक्ति नकारात्मक चिंतन करता है, बूरा सोचता है वह अनिश्ट परमाणुओं का ग्रहण करता है और वे अनिष्ट परमाणु हृदय का रोग पैदा करते हैं। बाहर का कोई कारण नहीं किंतु एक नकारात्मक चिंतन अनिष्ट चिंतन ऐसे अनिष्ट परमाणुओं का ग्रहण करते हैं कि वे परमाणु हृदय को दुर्बल बना देते हैं। हृदय की गति को समाप्त भी कर देते हैं। इसलिए आदमी मन, वचन काया की अशुभ प्रवृत्ति न करे। भाव विशुद्धि में रहे तो उसका स्वास्थ्य अच्छा रहता है।''

युवाचार्यप्रवर ने फरमाया कि सच्चाई और ज्ञान को समझ लेने के बाद भी मूर्च्छा और प्रमाद के कारण आदमी आत्मनिग्रह की साधना नहीं करता। धार्मिक साधना में अनुप्रेक्षा का महत्त्व रहा है। एक आत्मा शाश्वत है वह ज्ञान, दर्शन स्वरूप वाली है शेश जो संयोग है वे वियोग में बदलने वाले होते हैं। श्रावक यह सोचे कि जहां तक बन सके झूठ और गलत बात नहीं करनी चाहिए।

संबल प्राप्त करने हेतु आए परिवार

इस अवसर पर मुंबई से शांतिलाल जी तातेड़ का परिवार, उधना-सूरत से देवीलाल जी सिरोहिया का परिवार, सुजानगढ़ के होंगकोंग प्रवासी नौरतनमल जी गोलछा का परिवार आचार्य प्रवर से संबल प्राप्त करने उपस्थित हुआ। नौरतनमल जी गोलछा को उनकी सेवा का अंकन करते हुए मरणोपरांत पूज्यवरों ने 'कल्याण मित्र' संबोधन से संबोधित किया। इसी श्रृंखला में शांतिलालजी तातेड़ व देवीलाल सिरोहिया को उनकी सेवा का मूल्यांकन कर मरणोपरांत उन्हें श्रद्धानिष्ठ श्रावक संबोधन से संबोधित किया।

बोरावड़ की चाकरी सम्पन्न कर मुनि मदन कुमारजी व मुनि प्रबोध कुमारजी आज शनिवार को गुरु चरणों में उपस्थित होकर अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन मुनि मोहजीत कुमारजी ने किया।

- अशोक सियोल

99829 03770